...जीने का मकसद मिला...

ब्रह्माकुमार वसंत कुमार, एच.आर. भिलाई स्टील प्लांट।

इन्हें बचपन से ही एक खोज थी कि जीवन का एक मकसद हो। उसी खोज के लिए वे हरेक की लाइफ को ऑबज़र्व करते रहे। उन्होंने अपने मम्मी, पापा, दादा आदि को देखा तो पाया कि वे जैसे रुटीन, मकैनिकल लाइफ जी रहे हैं। तो मन में विचार आया कि यही लाइफ है! एक बार इसी सोच के साथ उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान को देखा, समझा और अधिक गहराइयों में जाने के लिए परमात्मा के महावाक्य मुरली का अध्ययन किया तो उन्हें उनके जीवन का मकसद मिला। ऐसा कहना है भिलाई स्टील प्लांट के एच.आर. ब्र.कु. वसंत कुमार का। ओमशान्ति मीडिया से हुई उनकी बातचीत के कुछ अंश...

प्रश्न: आप इस संस्था से कैसे जुड़े?

उत्तर: जब मैं काफी छोटा था, लगभग 8-9 साल का, तब मेरे मन में एक दिन अचानक आया कि मैं ज़िन्दा क्यों हूँ, मेरे जीवन का क्या उद्देश्य है। मैं सोचता था कि जैसे सभी लोग भेड़-बकरी की तरह जी रहे हैं, वो कोई लाइफ नहीं है। मैंने मेरी मम्मी को ऑबज़र्व किया कि मेरी मम्मी सुबह से शाम तक रोज़ वही कार्य करती है, उसमें कोई अंतर नहीं। रोज़ वही सबकुछ, एक मकैनिकल लाइफ जैसा। फिर मैंने अपनी लाइफ को चेक किया, तो मैंने यही जाना कि मेरी भी जो रुटीन लाइफ है वो एक मकैनिकल लाइफ है। मुझे ऐसा लगा जैसे कि आज मैं जिस उम्र में हूँ, मुझे कोई टेंशन नहीं है, मैं बहुत खुश हूँ, लेकिन माँ-बाप और दादा जी के लेवल पर उन्हें चिंताएं हैं, तकलीफे हैं, फिर भी वे एक रुटीन लाइफ जी रहे हैं। मैंने जीवन के सार को खोजने की कोशिश की... मैं घर से ये सोचकर निकलता था कि मैं वापस घर आऊंगा नहीं, ऐसा मैंने 10 बार से भी अधिक किया। मैं अपने आपको खत्म कर देना चाहता था, क्योंकि इस जीवन का कोई उद्देश्य नहीं था। फिर मैंने बहुत सारी किताबें पढ़ीं जैसे बाईबल, गीता, कुरान और बहुत अच्छे-अच्छे लेखकों की किताबें मैंने पढ़ी, लेकिन फिर भी मुझे जीवन का उद्देश्य नहीं मिल पाया। तब तक मैं एम.एस.सी. की पढ़ाई पूरी कर चुका था, मेरी जॉब भी लग गई थी स्टील प्लांट में। एक दिन मैं अपने प्लांट के पास के एरिया से कहीं जा रहा था, वहीं ब्रह्माकुमारीज़ की प्रदर्शनी लगी हुई थी, मैं भी वहाँ देखने चला गया। मैं वैसे तो आत्मा-परमात्मा, ये सब मानता नहीं था। फिर मैं सेंटर पर गया, सात दिन का कोर्स किया। 1990 में मुझे ये ज्ञान प्राप्त हुआ।

प्रश्न: ज्ञान मिलने के बाद आपको अनुभव हुआ कि ये वही जीवन का सार है जिसकी आप अब तक तलाश में थे?

उत्तर: ज्ञान मिलने के बाद परमात्मा की मुरली द्वारा मेरे मन में जितने प्रश्न थे, उन सबका जवाब मुझे मिल गया। फिर भी कुछ प्रश्न मन में आते थे, तो उस समय 1990 की बात है, भिलाई में कुछ बड़े डॉक्टर्स आये थे, उसमें एक डॉक्टर ने कहा था कि यहाँ जो ज्ञान दिया जाता है वो साइंटिफिकली प्रूव्ड है। वो बात मुझे बहुत अच्छी लगी और मैं इस ज्ञान की गहराइयों को समझता गया। मैंने तब से आज तक 26 साल में एक भी दिन मुरली मिस नहीं की, क्योंकि शुरु-शुरु में मुझे ज्ञान इतना स्पष्ट नहीं था, तो सेवाकेन्द्र पर मुझे दीदी ने कहा था कि अगर आप एक भी दिन मुरली मिस नहीं करोगे तो आप बाबा का हाथ कभी नहीं छोड़ोगे। उस दिन मैंने बाबा के कमरे में बैठकर प्रतिज्ञा की कि जिस दिन तक शरीर में प्राण रहेंगे उस दिन तक मुरली ज़रूर सुनूंगा।

प्रश्न: आपने बाबा को जाना, बाबा को देखा, पहली बार जब अव्यक्त बाबा से मिले तो आपको कैसा अनुभव हुआ?

उत्तर: जब पहली बार बाबा से मिलने के लिए मधुबन आना हुआ तो बाबा से मिलने वाले दिन सूर्य भाई की क्लास के बाद मुझे जीवन में पहली बार फरिश्तेपन, लाइट की बॉडी का अनुभव हुआ।

प्रश्न: वर्तमान समय में आप अपने उद्देय की पूर्ति के लिए क्या कर रहे हैं?

उत्तर: मैं अभी ब्रह्माकुमारीज़ के स्पोर्ट्स विंग का ज़ोनल कोऑर्डिनेटर भी हूँ तो उसके अंतर्गत मैं बहुत से ट्रेनिंग प्रोग्राम कराता रहता हूँ। मुझे जो करना है वो खुद इनवेन्ट करता हूँ। राजयोग का जो 7 दिन का कोर्स है उसे मैंने पूरे साइंटिफिक तरीके से बनाया है, जो मुरलियों पर आधारित है।

प्रश्न: आप भिलाई स्टील प्लांट के वर्कर्स के बारे में क्या सोचते हैं?

उत्तर: चार-पाँच साल के लिए मेरी माइंस में पोस्टिंग थी तो वहां व्यसन करने वाले बहुत ज़्यादा हैं। उनके लिए मैंने अलग तरह का कोर्स डेवलप किया है। कोर्स ईश्वरीय ज्ञान पर ही आधारित होता है लेकिन उनके हिसाब से ही कराता हूँ। मैं प्लांट में कई टॉपिक्स जैसे स्ट्रेस मैनेजमेंट, ऐटीट्यूड आदि पर क्लास कराता हूँ।

कैसे करें... - पेज 10 का शेष

जायेगा और यदि यह विचार कई बार चला गया तो वह घटना आज नहीं तो कल घटेगी ज़रूर क्योंकि आपने उसका आह्वान किया। अब यदि इसको हम संतों और महात्माओं पर लें तो कह सकते हैं कि वे निरंतर सकारात्मक विचारों को बुद्धि के बल से इस पूरे विश्व में भेजते थे कि सबका भला हो, सबका कल्याण हो, सब सुखी हों, सब निरोगी हों। अब इससे दुनिया का भला तो बाद में होगा, सबसे पहले तो उनका भला होगा, क्योंकि वे पूरे समय उन्हीं विचारों के साथ जी रहे हैं, उन्हीं संकल्पों के साथ जी रहे हैं। अब आप सोचो कि जब कोई व्यक्ति उनके सामने किसी दुःख, परेशानी आदि की बात लेकर जायेगा तो उनके संकल्पों में उस दुःख को हटाने की ताकत नहीं होगी! जैसे व्यक्ति को उन्होंने छुआ, तो छूने मात्र से ही प्रकृति बाहर की व अंदर की एक सेकण्ड में बदल जायेगी। उन्होंने पूरा जीवन, हर पल, हर क्षण इन्हीं संकल्पों में बिताया होता है, सिर्फ सुख, सिर्फ आनंद, सिर्फ प्रेम और कुछ नहीं। लेकिन हम तो कभी सुखी हैं तो बहुत सुखी हैं, लेकिन जब दुःखी होते हैं तो उस दुःख में इतना उलझ जाते हैं कि और दुःख को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं।

चमत्कार की बात लोग कर रहे हैं, लेकिन उदाहरण उन लोगों का देते हैं जिनको लोग जानते ही नहीं हैं। अरे! कितनी साधनायें इसके लिए करनी पड़ती होंगी। अपने मन को बाहरी, विनाशी बातों से हटाकर अविनाशी बातों पर लगाने में। आप देखो कि जब इस दुनिया का कोई संत या महात्मा आपको चमत्कार दिखाता है तो क्या वो चमत्कार हो सकता है, क्योंकि वो कमाने के लिए दिखा रहा है और उसमें जाल है, हम समझ नहीं पाते। हम आपको एक उदाहरण से समझायें कि एक व्यक्ति जंगल में रहता है, जिसको कुछ नहीं चाहिए, जिसे कोई दो मुट्ठी चावल दे दे तो पेट भर जायेगा, वो मांग नहीं रहा है और एक है जिसने पचास हज़ार रुपये में किराये का मकान लिया है वो आपको योग सिखाये। अब सबसे पहले तो पचास हज़ार रुपये निकालेगा तब तो योग सिखायेगा, तो उसका फोकस तो पैसा हो गया, फिर से विनाशी चीज़ उसके पास आयी। लेकिन जिसको कुछ नहीं चाहिए, वो जो करेगा वो आपको चमत्कार जैसा लगेगा, इसलिए दुनिया के इन महान संतों को सब लोग आज भी याद करते हैं, जिन्होंने समाज को सबकुछ दिया लेकिन लिया कुछ भी नहीं।

आप भी यदि ऐसा कुछ करना चाहते हैं तो अपनी सारी मान्यतायें तथा पूर्व अनुभवों से निकलकर अपनी बुद्धि को दिव्य बनायें, उसके लिए समझ विकसित करनी है कि क्या मेरे लिए उचित है और क्या अनुचित है। चमत्कार तो दोनों ही हैं लेकिन एक है रचनात्मक और दूसरा है विनाशकारी। चमत्कार वो है जिसमें समाज का हित हो, अपना भी हित हो और वो सुकूनदायक भी हो, जो परिणाम जनित न हो, जो सिर्फ हो। और वो कल्याण के सिवाय और कुछ नहीं हो सकता।

आगरा सेक्टर 7-सिकन्दरा। ईश्वरीय स्नेह मिलन कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए ब्र.कु. उषा,माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. सरिता व ब्र.कु. मधु।

डिबरुगढ़-असम। चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन अवसर पर अपनी शुभकामनाएं देते हुए पवन सिंह घटोवर,फॉर्मर सेंट्रल मिनिस्टर ऑफ इंडिया। साथ हैं पूर्व चेयरमैन चन्द्रकांत बरुआ, ब्र.कु. बिनीता व अन्य।

राजसमंद-राज.। अपराधी सुधार दिवस पर जेल में कैदी भाइयों को परमात्म संदेश देने के पश्चात् चित्र में जेलर फिरोज अहमद खान, समाज कल्याण अधिकारी डॉ. तुलसीराम आमेटा एवं ब्र.कु. पूनम।

जालोर-राज.। 'लाइफ स्किल एज्युकेशन कैम्प' के दौरान मंचासीन बायें से ब्र.कु. जगदीश,माउण्ट आबू, भंवरलाल सुंदिया,प्रिन्सीपल,सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल, रमा अरोड़ा,एन.एस.एस. इंचार्ज,गवर्नमेंट कॉलेज, ब्र.कु. रंजू, ब्र.कु. वीरेन्द्र,माउण्ट आबू व लूनकरण चाण्डक,प्रेसीडेंट,महेश्वरी समाज।

रेवाड़ी-हरियाणा। चैतन्य देवियों की झाँकी में देवियों के साथ ब्र.कु. बृजेश बहन, ब्र.कु. उषा व ब्र.कु. रचना।

उमरिया-विहार। चैतन्य देवियों की झाँकी का अवलोकन करने के पश्चात् एस.पी. चन्द्रशेखर सोलंकी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी।